TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

नवंबर 2024

अंक 3

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

यह किताब टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज, भागलपुर(टीम लीडर)

संकलनकर्ता

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

स्मृति शेष

बहुत स्नेह करता था न!
तू मुझे,
सब कुछ बताता था,
कहता था कुछ भी नहीं छुपाता
मैं तुझसे
मैं विस्मित करता तुझे
तू मुझे ज्यादा विस्मित कर देता
पर आज ज्यादा विस्मित कर दिया
चला गया छोड़ कर मुझे
यह कहकर कि
अब स्मृति में रहोगे।
जैसे सागर के गर्भ में पर्वत
बाहर से दिखता नहीं
तुम भी दिखोगे नहीं सामने से
पर भूलोगे भी नहीं
अंतिम बार तेरा चरण स्पर्श किया
जब चीर निद्रा में सोए थे तुम,
स्पर्शित हाथ कँपकपा गए
कम्पित हाथों को तूने स्नेह से कहा
छोड़ कर नहीं जा रहा रे
ये ऋचा देख रहे हो न
यह मैं ही हूँ
तेरी कविता में हूँ
शब्द बनकर
जब शाम ढले,
छत पर आना,
आसमान से घण्टों
बात करेंगे हम दोनों,
जिद नहीं करना आने को
ठीक ठीक सुनना, रोकूँगा
तुम्हें
जब पथ भटकेगा
दिल से आवाज आई
नाम के अनुकूल
विनोद करने की आदत
गई नहीं तेरी भैया।।

Sanjay Kumar

DEO Arariya

व्रत अनोखा छठी मईया का

छठी मईया का व्रत अनोखा,
धूप में तपते श्रद्धालु लोका।
सूरज को अर्घ्य देने का ये पर्व,
मिटाता दुखों का हर एक खर्व।
सूरज की किरणें पावन छवि,
आस्था में डूबी हर सजीव गाथा नई।
जल में खड़े होकर प्रार्थना का मान,
छठी मईया रखती सबका ध्यान।
सूप में फल, नारियल का दान,
मन में बसे श्रद्धा का मान।
सूरज के संग जल में सजे दीए,
मन में खुशियाँ और उमंग लिए।

उगा सूरज तो सबका चेहरा खिला,
डूबते को अर्घ्य से संतोष मिला।
छठी मईया का आशीष अनमोल,
सच्चे मन से पूजा करें हम सब लोग।
शक्ति, समर्पण और पवित्रता का भाव,
छठ पर्व का है ये विचित्र प्रभाव।
सुख-समृद्धि से भरे हर दिल का आँगन,
छठी मईया की कृपा से बने उज्ज्वल जीवन।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया, बिहार

शान निराली छठ व्रत की

छठ व्रत की शान निराली,
महापर्व की शोभा न्यारी।
हम बच्चों को खुशी देनेवाली,
अनुपम दृश्य लगती बड़ी प्यारी।
व्रती वंश की कामना रखती,
इस व्रत में यह ध्यान है धरती।
छठी मईया बच्चों के भाग्य हैं लिखतीं ,
उनके आशीर्वाद से वंश है चलती।
जीवन बड़ा सुखमय होता है,
जब पावन दृश्य सामने होता है।
इस पर्व की महत्ता को जानें,
कितना शुद्ध यह नियम पहचानें।
सब जगह शुद्धता रखा जाता है ,
भाव तभी निर्मल आता है।
छठ पर्व चार दिन तक चलता,
इससे अमृत फल है मिलता।
सबके लिए बड़े व्रत हैं न्यारे,
सब मिलकर गाते हैं प्यारे।
इस पर्व में साफ- सफाई,
यह बड़े महत्त्व का भाई।

यह पर्व मन निर्मल कर जाता,
बुद्धि, विवेक मनोहर भाता।
हम बच्चों को नए कपड़े मिलते हैं,
इसे पहन हम बड़े खुश दिखते हैं।
इस व्रत का प्रसाद है ठेकुआ, केला,
दृश्य घाट अति सुंदर वेला।
पूरा परिवार खुशी से झूमे,
हम बच्चे घर-घर घूमें ।
छठी मईया की कृपा जब होती,
अपना पराया का भाव है खोती ।
हम बच्चों के लिए यह व्रत सुहावन,
चार दिन तक लगते अति पावन।
यह पर्व घर- घर खुशियों को लाता,
जीवन सभी का मंगल कर जाता।
यह पावन व्रत हर साल है आता,
हम बच्चों को धन्य कर जाता।
छठी मईया हम सबको बुद्धि देवें,
क्रोध, लोभ हम से हर लेवें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

नित दिन प्रातः आता सूरज

नित दिन प्रातः आता सूरज
नित नया सिखलाता है।
नित सवेरे आकर कहता,
नया जीवन ही जग पाता है।।
कहता है यह नित दिन आकर
मृत्यु क्षय नहीं प्रकृति में
यह भी एक सृजन है।
एक बीज क्षय कर अपने को,
सौ को उपजता है।।
अपने को न्योछावर कर यह
बड़ा संदेश दे जाता है।
मरण को भी वरण कर कहता,
प्रकृति बड़ी सहृदय है।।

प्रकृति का इस रूप
देखकर
होता है प्रतीत यही
नित दिन प्रातः आता
सूरज
नित यही सिखलाता है।।
जीवन का नहीं केवल
मरण का भी जय है।
विशाल सहृदय इस प्रकृति
में,
जीवन और मरण का
दोनों का जय है।।

Sanjay Kumar

DEO Arariya

छठ व्रत का विधान

चार दिनों का यह अनुष्ठान
आस्था का यह व्रत महान।
करते इसको विधि विधान
होता जिससे जन कल्याण।।
प्रत्यक्ष जगत में है भगवान
हरपल उर्जा जो करते प्रदान।
मिलता जिससे जीवन दान
है इसकी यही विशिष्ट पहचान।।
छठ की महिमा करते गान
देते जिसमें सबको है मान।
छोटे-बड़े सब एक समान
जाति वर्ग का नहीं स्थान।।
साफ सफाई का रखकर ध्यान
मन की भक्ति को देकर तान।
कर श्रद्धा विश्वास का निर्माण
तब व्रत करता पुण्य प्रदान।।

नहा-खा से शुरू होता अनुष्ठान
दूसरे दिन का है खरना विधान।
डूबते सूर्य को करें अर्घ्य प्रदान
उदित सूर्य को अर्घ्य नव विहान।।
जन- जन का होता जहाँ मिलान
शुद्धता भरी है सहज विधान।
काया माया का मिले वरदान
सुखी समृद्ध हो सारा जहान।।
सूर्य षष्ठी व्रत का यही विधान
भरती है चेहरे पर मुस्कान।
पाठक को करें क्षमा प्रदान
अगर भूल हुई कोई अनजान।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

छठ पर्व की महिमा

छठ पर्व की महिमा अति न्यारी,
चार दिनों तक लगती है प्यारी।
जीवन सकल धन्य कर देती।
यह सर्व दुर्गुणों को हर लेती।
चारों ओर उत्सव और बधाई,
लगता जीवन में जागी तरुणाई।
हर घर में शोभा अति न्यारी,
महिला गीत गाती है प्यारी।
नहीं कहीं दीखता शोर शराबा,
नहीं कहीं मिलता मन से दुरावा।।
सब मिलते हैं भाई भाई ,
नहीं तनिक लगते हैं पराई।
चार दिनों का यह पर्व है पावन,
पल पल लगते अति मनभावन।
सब भक्ति रस में डूबे हुए हैं,
व्रती कठिन व्रत किए हुए हैं।
प्रेम, प्रसाद, पूजा और अर्चन,
इसमें प्रिय संवाद है अर्पण।
छठी मईया की घर- घर पूजा,
शुद्धता का विकल्प न दूजा।
यह पर्व श्रद्धा, प्रेम उपजाए,
मन में शुद्धता का भाव जगाए।
नहाय-खाय से शुरू होता पावन,
पारण के दिन लगते अति भावन।
घाटों की शोभा देखते ही बनती,
दउरा , डाला , सूप सर्वत्र है दिखती।
।।

चारों दिशाएँ मह-मह करती,
सुखद कल्पना से दिल है भरती।
क्या करूँ छठ पर्व की बड़ाई,
इतनी सुखद श्रद्धा है समाई।
बिछुड़े परिजन जरूर मिलते हैं,
जो साल भर कभी न दिखते हैं।
यह सूर्योपासना का पर्व मनोहर,
इस जग के सर्व प्राण हैं दिनकर।
उनसे ही यह लोक उजियारा,
उनसे ही सर्वत्र हरता अंधियारा।
इससे पवित्र नहीं कोई पावन,
न इससे रुचिकर मनोहर भावन।
इस पर्व का महत्त्व हम जानें,
कभी न दुराव सप्रेम पहचानें।
दिन पर दिन प्रीति रस बोई,
जीवन धन्य करे सो कोई।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

छठ- महिमा

सुर संस्कृत में छठ-महिमा, सब
मुक्त कंठ से गाते हैं।
तब सविता के प्रखर प्राण को,
आत्मसात् कर पाते हैं।।

शुचि, आहार-विहार नीति का,
पालन इसमें होता है,
फिर श्रद्धा, विश्वास, प्रेम का, पोषण
इसमें होता है,
जननीवत् वरदान प्रकृति के,सहज
हमें मिल पाते हैं।
तब सविता के प्रखर प्राण को,
आत्मसात् कर पाते हैं।।

प्राच्य संस्कृति में नदियाँ भी, देवी
का पद पाती हैं,
उनसे निर्मल भाव जुड़े तो, जीवन
को सरसाती हैं,
पावनता के लिए पर्व को, गंगा तीर
मानते हैं।
तब सविता के प्रखर प्राण को,
आत्मसात् कर पाते हैं।।

संध्या वंदन की गरिमा से,
मनुज श्रेष्ठता पाता है,
तप की भट्टी में तपकर वह,
जीवन धन्य बनाता है,
सूर्य अर्ध्य विज्ञान समझकर,
हम साधक बन जाते हैं।
तब सविता के प्रखर प्राण को
आत्मसात् कर पाते हैं।।

गौ, गंगा, गीता, गायत्री,
मानवता के गौरव हैं,
शुचिता स्वास्थ्य समृद्धि चेतना,
इनके द्वारा संभव है,
सूर्य देव के आराधन से, हम
इनको विकसाते हैं।
तब सविता के प्रखर प्राण को,
आत्मसात् कर पाते हैं।।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

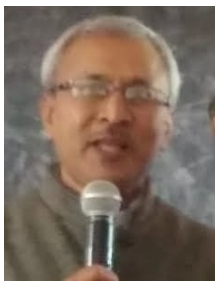

छठी की महिमा

जिसने चाहा वह फल पाया
हर सपना होता साकार है।
करते हैं हम सूरज उपासना
अति पावन छठ त्यौहार है।।
चार दिवसीय अनुष्ठान है होता
तीन दिनों का निर्जला उपवास,
स्वच्छता का विशेष महत्व है
पवित्रता का ध्यान रखते खास।
श्रद्धा भक्ति से हम इसे मनाते
सात्विक भोजन ही आहार है।।
जब छठ का शुभ दिन आता
दिल में उमंग उत्साह भर जाता।।
अमीर-गरीब या उच्च-नीच का
जाति-धर्म का भेद मिट जाता।
सभी जन मिलकर तैयारी करते
आपस में बनकर परिवार हैं।।

गली-मोहल्ले को लोग सजाते
एकजुट होकर हम घाट बनाते,
छठ व्रतियों की सुविधा की खातिर
अपनी पलकों पर उन्हें बैठाते।
छठ सामाजिक सौहार्द बढ़ाता
सिखाता कुशल व्यवहार है।।
यह लोक आस्था का महापर्व है
सूर्य उपासना में छिपा मर्म है।।
परोपकार से बढ़कर धर्म न दूजा
भारतीय होने पर हमें गर्व है।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म. वि. बख्तियारपुर, पटना

लें सबक प्रदूषण से

मजा नहीं अब सजा मिलेगी,
नित बढ़ते प्रदूषण के खतरे से।
होश में आओ हे मानव,
रोग फैल रहा दूषित कचरे से।।
वायुमंडल भी हुआ प्रदूषित,
जीवन शैली भी अब बिगड़ रही।
ग्लोबल वार्मिंग का अब खतरा मँडराया,
ग्लेशियर भी तेजी से सिकुड़ रही।।
हैं खतरे बहुत प्रदूषण के,
सब प्राणियों के कष्ट शीघ्र हरें।
इससे व्यथित सभी जन हैं,
हो जितना जल्द दुःख दूर करें।।
मानव ही नहीं जग के सारे प्राणी,
सभी विकल इससे होते हैं।
पेड़- पौधे इससे घोर दुःख पाते,
सभी सजीव भी इससे रोते हैं।।
मोक्षदायिनी गंगा पर खतरा छाया,
निरंतर गंगा माता सिकुड़ रही।
जनमानस में निरंतर भय जागा है,
पर्यावरण भी तेजी से बिगड़ रही।।

कृत्रिमता में न पड़ें अधिक,
अब प्रकृति से नाता शीघ्र जोड़ें।
जन्म हुआ किस कारण भी,
अपनी समझ से इधर भी रुख मोड़ें।।
वाहन का अति प्रदूषण भी,
अब सिर चढ़कर खूब बोल रहा।
यह देख बड़ा भय होता है,
मानव का भी धीरज डोल रहा।।
नदियाँ भी प्रदूषित हो रहीं,
नित बढ़ते प्रदूषण के खतरे से।
जल भी न अब स्वच्छ रहा,
कल कारखानों के दूषित कचरे से।।
सिमट रहीं हैं नदियाँ सारी,
कुछ तो उपाय हमें करना होगा।
सभी जीवों की रक्षा हेतु,
प्रदूषण से शीघ्र निपटना होगा।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

आओ गीत खुशी के गाएँ

चलो झूम के नाचें गाएँ ,
मिल जुलकर हम खुशी मनाएँ।
हम प्यारे बच्चे कितने अच्छे,
जितने नील गगन के तारे सच्चे।
सच्ची बात हम ही हैं करते,
नहीं तनिक कहीं भी डरते।
मम्मी पापा प्यार से हमें पुकारें,
हम हैं उनके राज दुलारे।
हम उनका नित कहना मानें,
अपने कर्त्तव्य को भी पहचानें।
हम कभी नहीं झगड़ा करते हैं,
सबके साथ मिलकर रहते हैं।
हम हैं धरती के चाँद सितारे,
लगते कितने हम सब प्यारे।

मिल जुलकर रहना सही है,
जीवन का संगीत यही है।
हम सब खेलें खाएँ मिठाई ,
साथ- साथ भी करें पढ़ाई।
पढ़ाई -लिखाई की अपनी शान,
खेल-कूद में बच्चों की जान।
पढ़ -लिख करें अपना कल्याण,
देश बनेगा तभी महान।
पल- पल की हम खुशी मनाएँ
आओ गीत खुशी के गाएँ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

चाचा नेहरू

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में,
किलकारी गूँजी आनंद भवन में।
अठारह सौ नवासी का साल,
चौदह नवंबर को जन्में लाल।
प्रारंभिक शिक्षा अपने परिवेश में,
फिर ट्रिनिटी पढ़ने गए विदेश में।
कैंब्रिज से वकालत कर आए,
स्वतंत्रता संग्राम में हाथ बटाए।
नौ बार सजा झेलें जेल में,
आत्मकथा रची अल्मोड़ा जेल में
पिता का पत्र पुत्री के नाम लिखा,
भारत की खोज इतिहास लिखा।

आराम हराम है नारा दिया,
बच्चों से खूब स्नेह था किया।
चाचा नेहरू का उपनाम मिला,
बाल दिवस का पैगाम मिला।
भारत ली जब तरुण अंगड़ाई,
स्वतंत्रता की तब बजी शहनाई।
करने देश का नव उत्थान,
जवाहर बने प्रथम प्रधान।
जवाहर लाल का कार्य महान,
भारत रत्न का मिला सम्मान।
बासठ के चीनी युद्ध से हुए बड़े मर्माहत,
चौसठ में चिर निद्रा ने दे दी इनको राहत।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

भारत के चमकते नूर

चाचा नेहरू के जन्म दिन पर,
हर वर्ष बाल दिवस मनाते हैं।
उनके सपने को हर शिक्षक,
हर बच्चे को गले लगाते हैं।
कोमल मन में जो भाव भरते हैं,
वही उनके दिल पर राज करते हैं।
भारत के वे चमकते नूर हैं,
वे मन के सच्चे कोहिनूर हैं।
बाल दिवस की स्वर्णिम वेला में ,
बच्चों में नव ज्ञान कराएँ ।
इस सुअवसर को हम पहचानें,
उनमें नव प्रकाश फैलाएँ।
उनमें सुंदर- सुंदर भाव जगाएँ,
उन भावों में संस्कार सजाएँ।
शिक्षकों का कर्त्तव्य निराला,
छात्र हितों का बड़ा रखवाला।
शिक्षक की फसल कीमती भाई,
इस पर ही जन जीवन सुखदाई।
समय पर खेल समय पर पढ़ाई,
है इन सबमें गुरुओं की चतुराई।
हर बच्चे अधखिले फूल हैं,
सब बच्चे सच्चे वसूल हैं।
हर फूल पूर्ण विकसित हो जाए,
इसका ध्यान सदा रख पाएँ।
शिक्षक की भूमिका निराली,
हर फूलों की करनी रखवाली।
आज बच्चों में बहुत उमंग है,
ऐसा लगता छाया तरंग है।
आज मंत्र उन्हें ऐसा दे दें हम,
उनके जीवन सफल कर दे हम।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

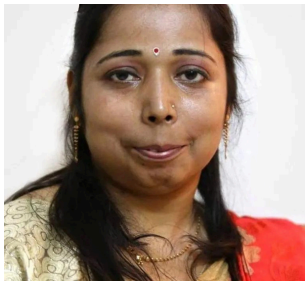

बच्चों जीवन को सादगी से अपनाना

बच्चों तुम अपनी शरारतें
बचा लेना,
छोटी-छोटी बातों पर रूठना
फिर पल में मान जाना
और दिल खोल मुस्कुरा
लेना।
वो किसी को रोते देख रोना,
किसी के खुशी में खुश होना,
किसी की उलझनों से
परेशान होना,
मिलजुलकर उलझनों को
सुलझा लेना।
बच्चों तुम अपनी मासूमियत
बचा लेना,
अपने पराए का हर भेद भूल
जाना,
अमीरी-गरीबी का फर्क
मिटाना,
जाति धर्म के झगड़ों से दूर
भाईचारा सीखा जाना।

जीत का तुम दिल से जश्न
मनाना,
हार को भी दिल से अपना
लेना,
हर हार से तुम एक नई सीख
लेकर,
जिंदगी की नई राह पर
कदम बढ़ा लेना।
बच्चों तुम अपनी सरलता
बचा लेना,
स्वार्थ की अंधी दीवारें,
बढ़ न सके कभी तुम्हारे
सहारे,
जीवन को सादगी से अपना
लेना।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

देव दिवाली मनाएँ आज

सदियों से आ रही रिवाज,
कार्तिक की पूर्णिमा है आज।
सुबह-सुवेरे गंगा में जाकर,
कर आते स्नान हैं आज।
दिव्य रथ रूप धरी धरा,
शशि सूर्य चक्र बने आज।
मेरू धनुष बासुकी बने डोर,
विष्णु बाण रूप लिए आज।
तारकाक्ष, कमलाक्ष, विद्युन्माली,
तीनों असुरों का वध आज।
अभिजीत नक्षत्र में शिव,
तीनों पुर भस्म किए आज।

त्रिपुरासुर का कर विनाश,
त्रिपुरारी शिव कहलाए आज।
देवों का संताप मिटाकर,
सुरलोक मुक्त कराएँ आज।
तब झूम उठे देव सभी ,
जगमग ज्योत जलाएँ आज।
धरा गगन था हुआ प्रकाशित,
देव दिवाली मनाएँ आज।
आओ पाठक दीप दान करें,
घर आँगन चमकाएँ आज।
देवों का शुभ आशीष मिले,
शुभ दीप ज्योति जलाएँ आज।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

स्वच्छता हमारा मूलमंत्र

स्वच्छता हमारा मूलमंत्र है,
यह शरीर का मजबूत तंत्र है।
सबसे यही अनुरोध करें हम,
स्वच्छ रहने का यत्न करें सब।
हम अपने हाथों की करें सफाई,
मम्मी तभी देगी दूध मलाई।
खाने के पहले शौच के बाद,
भूल न जाएँ साबुन से धोना हाथ।
जब अच्छी तरह धोएँगे हाथ,
तभी सेहत देगी हमारा साथ।
साफ हाथों में दम दिखेगा,
प्रसन्न मन भी तभी खिलेगा।
कभी न करना उल्टा काम,
खाकर कभी न करना स्नान।
पहले स्नान तभी हो भोजन,
तभी बनेगा निरोगी जीवन।
रोज स्नान हो रोज सफाई,
हो न कभी चर्म रोग कसाई।
दूध नमक कभी साथ न खाएँ,
खुजली होने से हम सब बच जाएँ।
हो स्वच्छता से नाता जरूरी,
पढ़ाई- लिखाई तभी हो पूरी।
कभी न सड़क पर धूल उड़ाएँ,
न कभी कहीं गंदगी फैलाएँ।
अपने आस-पास की करें सफाई,
होगी तभी हम सबकी भलाई।
डस्टबिन में हमेशा कचरा डालें,
स्वच्छता नियमों को हम सब पालें।
नाखून कभी न हम बढ़ाएँ,
स्वच्छता की ओर एक कदम बढ़ाएँ।
स्वच्छता भरे काम सदा कर पाएँ।
इधर-उधर गंदगी न फैलाएँ।
जितना हम साफ- सफाई रखेंगे,
उतना ही हम अधिक स्वस्थ रहेंगे।
दें स्वच्छता का हरदम पैगाम,
इससे जीवन में मिलते ढेरों इनाम।
घर से स्कूल तक हो स्वच्छता का ध्यान,
देश हमारा बने तभी महान।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

माटी का दीया

माटी का एक दीया टिमटिमा रहा था
अज्ञान उसे घूर रहा था
मीठी बयार दीया को
बुझाने की सोच रही थी !
मैं सोच रहा था
आखिर दीया किसका है?
गरीब या अज्ञान रुपी बस्ती का
या प्रकाश की लौ से
उजाले की ओर ले जाने का !
मेरा मन कहता है, दीया जानता है
अंधकार उसे पसंद नहीं
जलना और दुनिया को
अंधेरे में गुम हो चुकी
तस्वीर को दिखलाना ही
उसकी फितरत है !।

दीया के जलने से
अंधेरे को चीरकर अंधकार
टूटकर बिखर जाता है !
टकटकी लगाए दीया को आँधी
बुझाने को जब ठानती है
मानवता की छाँव दीया को
घेर लेती है तब
दीया का मन खिल उठता है
वह मानवता को चहककर कहता है
तुमने किसी को प्रकाशित होते देखा
है !

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

शिक्षा की ज्योति जलाने वाले

साथ मिलकर चलें, हम मिलकर रहें,
एक दिन मंजिल हमें जरूर मिल जाएगी।
साथ मिलने और चलने से ताकत बढ़े,
अरमानों को निश्चित पंख लग जाएँगे।
कदम ही कदम यूँ ही लोग चलते रहें,
मंजिल मुस्करा कर खुद समीप आएगी।
इसमें खुशियाँ बड़ी, इसमें दिल भी बड़ा,
इस हौसले से शक्ति बड़ी मिल जाएगी।
जब हम शिक्षा की ज्योति जलाने चलें ,
हर खुशियाँ हमारे करीब आएँगी।
जमीं से उठूँ, आसमां तक फिरूँ,
यह नसीब बनके एक दिन जरूर छाएगी।
यूँ ही हरदम कदम मिलाकर बढ़ाते रहें,
शिक्षा का दीप घर-घर जगमगा जाएँगे।
मुद्दतों से हौसला कभी डगमगाया नहीं,
आज कैसे वो हौसला डगमगा जाएगी।
साथ मिलकर चलें, हम मिलकर रहें,
एक दिन मंजिल हमें जरूर मिल जाएगी।
बिना शिक्षा के जीवन है किस काम का,
उसे लेकर रहेंगे, दिल बहल जाएँगे।
हर व्यक्ति को शिक्षित है करना हमें,
सबके जीवन में इंद्रधनुषी रंग छा जाएँगे।
जब राहों में चलें हम सीना तान के,
मुश्किलें भी कहीं तो सिमट जाएगी।
शिक्षा की मुहिम यूँ ही बढ़ाते रहें,
सफलता हमें एक दिन मिल जाएगी।
सुर में सुर यूँ ही हम मिलाते रहें,
एक दिन मंजिल जरूर हम पा जाएँगे।
इस जिंदगी के सफर में अकेला मैं नहीं,
साथ चलने से किस्मत सँवर जाएगी।
जीवन जीना है कितना, यह हमें पता ही नहीं,
पर जीवन जीने की सूरत बदल जाएगी।
चल पड़े जब शिक्षा का मशाल ले हाथ में,
तब खुशियाँ सर्वत्र हमें मिल जाएगी।
साथ मिलकर चलें, हम मिलकर रहें,
एक दिन मंजिल हमें जरूर मिल जाएगी।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

माँ बिना जहाँ भी कुछ नहीं

माँ
तेरा वो दुलारना
तेरा वो पुचकारना
तेरा वो लोरी सुनाना
तेरा वो घिस-घिस बर्तन माँजना
उससे निकले मधुर संगीत सुनना
तेरा वो प्यार से डाँटना
कभी चुप रहकर मन को भाँपना
सिर के बाल फेरना
अनकही बातों को सुनना
कंघे करना, बस्ते, टाई गले में लटकाना,
टिफिन देना और रोज वही बात कहना
टिफिन पूरा फिनिश करना
तेज कदमों से बस तक छोड़ने जाना
बस स्टॉप तक आना
एक लंबी साँस भरना
हिलते हाथों से बाय करना
छुट्टी होने से पहले ही बस स्टॉप पहुँचना
बस का थोड़ी देर होने पर हीं बेचैन हो जाना
अनगिनत सवालों से घिर जाना
फिर बस का आना
और बेटे को देख मुस्काना
?

फिर उँगली थामे घर जाना
आते- जाते
नित नए- नए सबक संस्कार सिखाना
राजा बेटे को कल की चुनौतियों के लिए तैयार करना
उसे नित-नित गढ़ना
उसे तपिश में तपते देख भी विचलित न होना
उसके ढहते विश्वास देख स्व-संबल बन जाना
उसे हर क्षण अपने गले का हार बनाए रखना
बस इतना भर ही
माँ का फर्ज थोड़े हीं है।
माँ का प्यार पूछो उससे
जिसके हिस्से में माँ नहीं।
जिसके किस्से में माँ नहीं।
माँ है तो जहाँ है,
जहाँ भी कुछ नहीं यदि
माँ सौभाग्य में नहीं।

अवनीश कुमार

व्याख्याता
बिहार शिक्षा सेवा

सत्य का प्रकाश

सत्य का प्रकाश फैलाए,
हर अंधकार को मिटाए,
स्वार्थ की सीमा से परे
त्याग का दीप बन जाए,
मेरा दीपक जलता जाए।
आँधियों से न घबराए,
हर चुनौती को अपनाए,
संघर्षों का साथी बनकर,
जीवन का अर्थ समझाए,
मेरा दीपक जलता जाए।

ज्ञान का उजियारा लाए,
हर मन रौशन कर जाए,
शिक्षा, सेवा, प्रेम का संदेश,
दुनिया को दिखाता जाए,
मेरा दीपक जलता जाए।
शिक्षा के मंदिर से सदा,
ज्ञान का अलख खूब जगाए,
हर वन-उपवन की भाँति,
बाल मन के अंदर शिक्षा का,
मेरा दीपक जलता जाए।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

प्यारा-सा चाँद

चमक रहा है आसमान में, प्यारा-सा चाँद,
सितारों के संग खेल रहा है प्यारा-सा चाँद।
चुपके-चुपके झाँक रहा है बादलों की आड़ में
झिलमिल रोशनी फैला रहा, पुरवाई बयार में।
रात के सन्नाटे में, देता है वह संग,
नन्हें दिलों के सपनों को भरता है उमंग।
जुगनू संग बात करे, तारों के खेल,
जैसे कोई बच्चा हो, मचाए धूम-धरेल।
कभी गोल, कभी अर्धचंद्र, बदलता है वह रूप,
शीतलता से भर देता, गलियारों में धूप।

कहानी बन सुनता है, दादी की वह बात,
रात के परदे पर लिखता, सपनों की वह बात।
सो जाओ अब बच्चों, चाँद है गवाह,
खुशियों का संदेश लाया, साथ है दुआ।
सपनों में भी मिलेगा, साथ ऐसे निभाएगा,
प्यारा-सा चाँद, हर रात लोरी तुम्हें सुनाएगा।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया, बिहार

सूरज दादा

सूरज दादा सूरज दादा,
तुम प्रकाश फैलाते हो।
गर्मी में तुम बड़े सवेरे आते,
जाड़े में क्यों इतनी देर लगाते हो ?
पर शाम में जल्द ही तुम कहीं छुप जाते हो।
गर्मी में अधिक ताप हो देते,
पर जाड़े में इसे छोड़ कहीं तुम आते हो।
जाड़े में बड़े प्रिय लगते तुम,
पर गर्मी में बड़े तीक्ष्ण बन जाते हो।
भाते तुम सदा जाड़े में दादा ,
जब बड़े भोले भाले बन जाते हो।
तुमसे ही यह ब्रह्माण्ड है सारा ,
तुमसे ही है यह जग उजियारा।
तुम बिन हर नहीं सकता अँधियारा,
हो तुम्हीं सब प्राणियों का सहारा।
तुम- सा नहीं सखा दुनिया में ,
तुम-सा नहीं देव दुनिया में।
जग के तुम हो बड़े समदर्शी ,
तुम्हारे रूप बड़े प्रियदर्शी।
तुम हो जग के पालनहारे,
हो तुम्हीं जग के रखवारे।
तुम बिन जग है अति सूना ,
तुम बिन प्रेम कहीं नहीं दूना।
तुम्हीं हो ब्रह्माण्ड चलानेवाले,
हो तुम्हीं ग्रहों के रखवाले।
तुमसे ही सबके प्राण पलते हैं,
तुमसे ही सबके जान चलते हैं,
हो जग के तुम बड़े रक्षक ,
तुम हो घोर अंधकार के भक्षक।
जीवन तुम्हीं धन्य कर जाते,
भेद नही कभी तुम कर पाते।
है यही तुम्हारी बड़ी निष्पक्षता ,
यही है तुम्हारी बड़ी महानता।
तुम ही सबके प्राण के दाता,
तुम्हीं हो सबके भाग्य विधाता।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

बीज की चाह

दाना हूँ मैं नन्हा-मुन्ना,
मिट्टी में हूँ गड़ा-गड़ा!
कैसी होगी दुनिया बाहर,
सोच रहा हूँ पड़ा-पड़ा!
मीठा-मीठा पानी पीकर,
अंकुर मैं बन जाऊँ!
बढ़िया खाद मिले तो खाकर,
खिल-खिलकर मुस्काऊँ!
बाहर आकर धीरे-धीरे,
बड़ा पेड़ बन जाऊँ!
नीले-नीले अंबर नीचे,
हवा संग लहराऊँ!
नन्हीं चिड़िया मेरे ऊपर,
अपना नीड़ बनाए!
सुंदर मीठे गीत सुनाकर,
मेरा मन बहलाए!

तपती गर्मी से थककर जब,
राहगीर भी आए!
शीतल-शीतल छाया पाकर,
खुश तुरंत हो जाए!
तेज हवा के झोंके खाकर,
मीठे फल बरसाऊँ!
मेरे पास चले जब आओ,
तुमको ख़ूब खिलाऊँ!

मेराज रज़ा
रा० उ० म० विद्यालय ब्रह्मपुरा,
मोहिउद्दीननगर, समस्तीपुर

दोहावली

रखें शिष्य के शीश पर,
गुरु आशिष का हाथ।
तिमिर सर्वदा दूर हों,
पथ आलोकित साथ।।
विद्यालय है ज्ञान का,
परम सुघर भंडार।
छात्र सदा पाते यहाँ,
एक नया संसार।।
विद्यालय में ज्ञान का,
करते रहिए दान।
प्रतिदिन ज्ञानाभ्यास से,
मिलता है सम्मान।।
बच्चे कोमल भाव के,
सौम्य सरल प्रतिरूप।
अच्छी शिक्षा से सदा,
करिए और अनूप।।

पुस्तक जैसा है नहीं, कोई
सच्चा मित्र।
सरल सुवासित भाव की,
नित फैलाती इत्र।।
बच्चों के मन में भरें,
अभिनव नैतिक ज्ञान।
अमिट ज्ञान पाकर सदा,
बनते देश महान।।
नव प्रत्यूषा से सदा, करें
विमल परिवेश।
पावन निर्मल भाव में, नहीं
किसी को क्लेश।।
अंतर्मन से कर्म को, देखें
सौ सौ बार।
सच्चे कर्मों में छिपा, जीवन
का उपहार।।

देव कांत मिश्र

मध्य विद्यालय धवलपुरा
सुल्तानगंज, भागलपुर, बिहार

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010